मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

भिण्डी के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

श्वेता पटेल
कीट विज्ञान विभाग, गोबिन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर,उत्तराखण्ड–263145
ई–मेल:patel19.rk@gmail.com

भिण्डी की खेती मुख्यतः दो प्रकार की होती है, बसंतकालीन तथा वर्षाकालीन। भिण्डी की दोनो फसलों पर कीटों का प्रकोप होता है और यदि उनकी रोकथाम के लिए उपाय न किए जाये तो लाभदायक खेती सम्भव नहीं है। भिण्डी में मुख्यतः निम्नलिखित कीट हानिकारक हैं :

सफेद मक्खी :

यह वर्षाकालीन फसल के अत्यन्त हानिकारक कीटों में से एक है। यह एक बहुभक्षीय कीट है जो अनेकों पौधों की जातियों पर सफलता पूर्वक पनपता है। इसका प्रौढ़ छोटे आकार का लगभग 1.0 से 1.5 मि0 मी0 लम्बाा तथा हल्का पीला होता है। पंखों पर सफेद मोमी चूर्ण की उपस्थिति के कारण यह चमकीले सफेद दिखते हैं।

हानि तथा लक्षण :

मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर छोटे–छोटे अण्डे देती है। अण्डों के फुटाव के पश्चात् नवजात शिशु कुछ समय के लिए घूम कर उपयुक्त स्थान चुनकर पत्ती क निचली सतह में अपने मुखांग चुभा देता है। यह पूर्ण शिशुकाल में उसी स्थान पर चिपका रस चूसता रहता है और वही प्यूपावस्था में परिवर्तित हो जाता है। प्यूपा से निकल पर प्रौढ़ उड़ कर पौधों पर जाकर पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते रहते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं। वास्तव में इस कीट का महत्व भिण्डी का पीली शिरा विषाणु रोग फैला देती हैं। इस रोग के कारण अत्यधिक हानि होती है।

नियंत्रण:

1. पीली शिरा विशाणु रोधी प्रजातियों जैसे परभनी क्रान्ति, पंजाब पदमिनी आदि को बोना चाहिए पूसा सावनी प्रजाति को वर्शाकालीन मौसम में नहीं बोना चाहिए।
2. फल लगने से पूर्व फास्फोमिडान 86 डब्लू एस0 सी0 की 200 मि0लि0 अथवा डाएमैथोएट की 700 मि0लि0 मात्रा आवश्यकतानुसार पानी की मात्रा में घोल बना कर छिड़काव करने से कीट नियंत्रित हो जाता है।
3. फूल लगने की अवस्था में मैलाथियान 50 ई0 सी0 की एक मि0लि0 मात्रा प्रति लिटर पानी की दर से पत्तियों की ऊपरी व निचली सतहों पर अच्छी तरह से छिड़कने से नियंत्रण प्राप्त होता है।
4. खेतों में तथा उनके आस पास के क्षेत्र में खरपतवारों को नष्ट करते रहना चाहिए।

प्ररोह तथा फल बेधक कीट:

इस कीट का प्रौढ़ मध्यम आकार का पतंगा है जिसका सिर तथा उदर पीले रंग के हैं। दो प्रजातियों में से एरियस विटेला के अग्रिम पंखों तथा दूसरी प्रजाति के दोनों अग्रिम पंख समान रूप से हरे होते हैं। दोनों की सूड़ियों भूरी सफेद रंग की होती हैं, उनके भारीर पर हल्के रोऐं होते हैं तथा इनके बीज काले भूरे रंग के धब्बे पाए जाते हैं।

हानि तथा लक्षण:

जमाव के लगभग तीन से चार सप्ताह के पश्चात ही कीट का प्रकोप आरम्भ हो जाता है। अण्डों के फुटाव के पश्चात नवजात सूंड़ियां कोमल प्ररोहो में प्रवेश करके भीतर हो भीतर खाती हैं। परिणामस्वरूप प्ररोह मुरझाकर लटक जाते हैं और अन्त में सूख जाते हैं। छोटे पौधों पर आक्रमण होने पर पौधे की मृत्यु भी हो सकती है। कलियाँ लगने पर यह उनमें प्रवेश करके उन्हें खोखला कर देते हैं। फल लगने पर फलों को बेध कर कोमल बीजों को खाते हैं। ग्रसित फल टेढ़े मेढ़े हो जाते हैं। एक फल में कई सूड़ियाँ हो सकती है। यह

फल से निकल कर फिर प्रवेश कर जाती हैं। इस सूंडी के प्रकोप का एक विशेष लक्षण यह है कि जिस किसी भाग को बेध कर खाती हैं। वहाँ से छिद्र द्वारा इसका मल बाहर निकला दिखाई देता है।

नियंत्रण :

1. भिण्डी की कुछ प्रजातियों मे इसका प्रकोप कम होता है। कुछ प्रजातियों जैसे ए0ई0 79, लुधियाना स्लेक्शन –2, तथा ई0एम0एस0–8 कम ग्रसित होती हैं।
2. ग्रसित प्ररोहो तथा फलों व कलियों को तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिए ताकि इनके भीतर सूंडी भी नष्ट हो जाए। ग्रसित फलों को खेत में नहीं छोड़ना चाहिए।
3. पौधों में फूल आने से पूर्व की अवस्था में क्विनांलफास 25 ई0सी0 1.5–2.0 लिटर आवश्यकतानुसार पानी में घोल बना कर जमाव के 15 दिन के पश्चात से छिड़काव और करने चाहिए। दूसरा छिड़क्राव की उपरोक्त मात्रा द्वारा जमाव के 40 दिन पश्चात, तीसरा छिड़काव फेनवेलरेट 20 ई0 सी0 250 मि0 लि0 अथवा डेल्टोमेथ्रिन 2.8 ई0 सी0 350 से 400 मि0ली0 प्रति हे0 की दर से जमाव के 55 दिन के पश्चात तथा चौथा छिड़काव 70 दिन के पश्चात करने से कीट का प्रकोप कम हो जाता है। फल लगने पर मैलाथियान 50 ई0सी0 की 1.5 लि0 अथवा कार्बरिल 50 प्रतिशत घुलनशील पाउडर की 1.5 कि0ग्रा0 मात्रा आवश्यकतानुसार पानी मे मिला कर छिड़काव भी किया जा सकता है।

लीफ हॉपरः

यह बहु भक्षीय कीट हैं भिण्डी के अतिरिक्त टमाटर, मिर्च, आलू, बैंगन, फ्रेंचबीन आदि सब्जियों की फसलों को भी हानि पहुंचाता है। इसके प्रौढ़ बहुत छोटे आकार के पीले हरे रंग के तथा शिशु हल्के रंग के होते है। शिशु पत्तियों की निचली सतह पर तथा प्रौढ़ दोनों सतहों पर दिखाई देते हैं। इनका शरीर आगे से चौड़ा तथा पीछे से संकरा होता जाता है। यह कभी सीधे नहीं चलते केवल अगल बगल चलते हैं।

हानि तथा लक्षणः

शिशु तथा प्रौढ़पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। कीटों की संख्या अधिक होने पर रस चूसने के कारण पौधो की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भिण्डी में रस चूसने की प्रक्रिया के दौरान यह एक प्रकार का विश पत्तियों की कोशिकाओं में छोड़ते रहते हैं। परिणाम स्वरूप पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और किनारों से अन्दर की ओर मुड़ने लगती है। धीरे – धीरे मुड़े हुए स्थान पर ईट जैसा लाल रंग दिखने लगता है। अन्ततः पत्तियां भूरी होकर सूखकर गिरने लगती हैं। इस प्रकार के लक्षण हो ''हापर बर्न'' कहते हैं। इसके कारण पौधों तथा फलों का आकार छोटा रह जाता है तथा उपज में भारी कमी आ जाती है।

नियंत्रण :

1. कीट रोधी, प्रजातियां जैसे 'ए0ई0 30 तथा ए0ई0 22 बोने से लाभ होता है।
2. जिन क्षेत्रों में प्रकोप अधिक होता है वहां उपयुक्त कीटनाशियों के तीन छिड़काव करने से लाभ होता है। पहला छिड़काव जमाव के 30 दिन, दूसरा 45 दिन तथा तीसरा 60 दिन के पश्चात करना चाहिए। पहला छिड़काव मोनोक्रोटोफास 1 मि0लि0 प्रति लिटर पानी की दर से, दूसरा छिड़काव भी इसी दवा द्वारा तथा तीसरा छिड़काव अथवा मैलाथियान 50 ई0 सी0 1.5–2.0 लिटर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार घोल बना कर करना चाहिए।

लाल मकड़ी माइटः

यह अत्यन्त सूक्ष्म जीव है, इनका रंग चमकीला लाल होता है तथा भारीर पर दो धब्बे होते हैं। यह पत्ती की निचली सतह पर एक हल्के जाले के नीचे रहते हैं।

हानि तथा लक्षणः

शिशु तथा प्रौढ़ पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते रहते हैं। अधिक रस चूसने के कारण पत्तियों पीली पड़ कर सूखने लगती हैं। ऐसा इनकी अधिक संख्या में होने पर ही होता है। पत्तियों की ऊपरी सतह पर सूई की नोक के समान हल्के पीले दाग दिखाई देते हैं। अधिक प्रकोप होने पर पौधों की बढ़वार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। बंसतकालीन फसल पर इनका प्रकोप अधिक होता है।

नियंत्रण :

यदि प्रकोप अधिक हो तो डाएमेथोएट 30 ई0सी0 700 मि0 लि0 अथवा मैलाथियान 50 ई0सी0 1.5 लीटर आवश्यकतानुसार पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चहिए। क्योंकि यह जीव कीट नहीं है अतः

घुलनशील गंधक के पाउडर की 3 ग्रा0 मात्रा प्रति लिटर पानी की दर से छिड़काव करने से अच्छा नियंत्रण प्राप्त होता है। अधिक ताप मान के दिनों में गंधक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

विशेष ध्यान देने योग्य बातें:

फल लगने पर तोड़ने योग्य फलों को तोड़कर ही कीटनाशी का प्रयोग करें तथा छिड़काव तथा फल तोड़ने के बीच के अनुमोदित प्रतीक्षाका अथवा अन्तराल पर ही फलों को तोड़ना चाहिए। गर्मी के दिनों में दिनों में कड़ी धूप में कीटनाशियो का छिड़काव अथवा बुरकाव छिड़कने वाले के स्वास्थ के लिए हानिकारक है।

बरसात के मौसम में कीटनाशी के घोल में सेन्डोविट 1 ग्रा0 प्रति लीटर घोल की दर से अच्छी तरह मिला कर छिड़काव करने से उपयोगिता बढ़ जाती है। खेत मे छिड़काव, बुरकाव अथवा किसी अन्य रूप में कीटनाशी के प्रयोग के बाद यदि खेत में घास निकाली गई हो तो ऐसी घास जानवर को नहीं खिलानी चाहिए। अनुमोदित प्रतीक्षा काल समाप्त होने पर ही इसका उपयोग किया जा सकता है।

कीटनाशी खरीदते समय इस बात को सुनिश्चित करलें कि उपयोग करने की तिथि निकल न चुकी हो अन्यथा कीटों का नियंत्रण नहीं होगा।